New York Money Market

न्यूयार्क के मुद्रा-बाजार का विकास प्रथम महायुद्ध के बाद हुआ। यह लंदन मुद्रा-बाजार से पूर्णतया भिन्न है। अल्पकालीन ऋण के लिए विश्व में ... ढंग का यह अकेला संगठित बाजार है। अपने न्यूयार्क के मुद्रा-बाजार में लंदन मुद्रा बाजार की तरह स्वीकृति-गृह एवं बट्टा-गृह नहीं हैं। यहाँ के मुद्रा-बाजार व्यापारियों के एक छोटे-समूह के ... हाथ में हैं जिसमें पाँच प्रमुख बैंक तथा इनके अतिरिक्त लगभग 12 अन्य संस्थाएँ अथवा व्यक्ति हैं जो न्यूयार्क के वॉलस्ट्रीट में केन्द्रित हैं। इसका सम्बन्ध मुख्यतः अल्पकालीन सरकारी हुण्डियों से रहता है। अमेरिकन बैंकिंग प्रणाली में सदस्य बैंकों का यहाँ के केन्द्रीय बैंक से सीधा सम्पर्क रहता है। सदस्य बैंक आवश्यकता पड़ने पर सीधे केन्द्रीय बैंक से सहायता अथवा ऋण ले सकते हैं।

इस प्रकार की बात इंगलैण्ड की बैंकिंग प्रणाली में नहीं पायी जाती है। इस प्रकार स्वीकृति-गृहों एवं बट्टा-गृहों के अभाव में मुद्रा-बाजार में सदस्य बैंकों की ही प्रधानता रहती है। न्यूयार्क मुद्रा-बाजार में लेन-देन का कार्य निम्नलिखित साधनों अथवा विपत्रों के आधार पर होता है:-

Scanned with CamScanner

(1) व्यावसायिक प्रपत्र,

(2) विनिमय बिल,

(3) शेयर बाजार को दिया जाने वाला ऋण,

(4) ट्रेजरी सर्टिफिकेट।

(1) व्यावसायिक प्रपत्र :→ यह न्यूयार्क मुद्रा-बाजार में लेन-देन का एक प्राचीन एवं अनोखा साधन है। यह एक प्रकार का अल्पकालीन प्रतिज्ञा-पत्र है जिसे कुछ व्यवसायी विशेष स्थिति में अल्पकालीन स्थिति में ऋण प्राप्त करने के लिए जारी करते हैं। इस प्रकार के पत्रों की अवधि साधारणतया तीन महीने से लेकर छः महीने तक की होती है। कोई सदस्य-बैंक इस प्रकार के पत्रों को तभी खरीदता जब उसे उस फर्म विशेष की आर्थिक स्थिति के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त रहती है। इस प्रकार से व्यावसायिक प्रपत्रों की प्रधानता न्यूयार्क मुद्रा-बाजार की एक प्रमुख विशेषता है। लंदन में इस प्रकार का कोई साधन नहीं है, किन्तु न्यूयार्क मुद्रा-बाजार में भी व्यावसायिक पत्रों का आज उतना महत्व नहीं रह गया है यद्यपि पिछले कुछ वर्षों से पुनः इनके महत्व में वृद्धि हो रही है।

(2) विनिमय बिल! – न्यूयार्क मुद्रा बाजार में विनिमय-बिलों के आधार पर भी लेन-देन का कार्य होता है। विनिमय बिलों को खरीदकर बैंक जिस प्रकार के साख की सृष्टि करते हैं, उसे Banker's Acceptances कहते हैं। इस प्रकार की बात लंदन मुद्रा-बाजार में नहीं पायी जाती है। लंदन मुद्रा-बाजार में व्यावसायिक बैंक बट्टा-गृहों से विनिमय बिलों का क्रय करते हैं, किन्तु अमेरिका में बट्टा-गृहों के अभाव में सदस्य-बैंक सीधे व्यापारियों से ही विनिमय बिलों को खरीदते हैं। अतः विनिमय बिलों की तरलता की धारणा लंदन की अपेक्षा न्यूयार्क में भिन्न है।

(3) शेयर बाजार को दिया जाने वाला ऋण :→ अमेरिका में लंदन मुद्रा-बाजार जैसे-मुद्रा-बाजार नहीं होने के कारण वहाँ के सदस्य-बैंक शेयर-बाजार को अल्पकालीन ऋण नहीं दे सकते हैं। ऐसी स्थिति में वहाँ के बैंक शेयर-बाजार को अल्पकालीन ऋण देते हैं। अमेरिका में बैंक भी कम्पनियों के हिस्से में अपनी पूँजी लगाते हैं। यहाँ के बैंकों के विनियोग का अधिकांश भाग शेयर-बाजार को दिये जानेवाले ऋण का ही होता है। इस प्रकार इस ऋण में भी दोनों मुद्रा-बाजार में बहुत कुछ विभिन्नता

पायी जाती है, किन्तु शेयर बाजार को दिये जाने वाले ऋण का अमेरिकी बैंकिंग व्यवस्था पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। शेयर बाजार को सट्टेबाजी के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। जिससे इस प्रकार का ऋण वहाँ की बैंकिंग तथा आर्थिक व्यवस्था को अस्थायी बना देता है।

उदाहरण के लिए, 1924 ई० से 1929 ई० के बीच अमेरिका में हुई तेजी शेयर बाजार की प्रतिभूतियों की तेजी थी, जिसके लिए वहाँ के बैंक बहुत हद तक उत्तरदायी थे। किन्तु शेयर बाजार की उस तेजी का आधार बहुत खोखला था जिससे 1929 ई० में इसका एकाएक अंत हो गया तथा महान आर्थिक मंदी के युग का प्रादुर्भाव हुआ। इसलिए अमेरिकी सरकार ने 1933 ई० में शेयर-बाजार को दिये जाने वाले ऋणों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इस प्रतिबंध के अनुसार कोई भी बैंक शेयर-बाजार की प्रतिभूतियों के मूल्य के एक निश्चित प्रतिशत से अधिक कर्ज नहीं दे सकता। यह प्रतिशत समय-समय पर फेडरल रिजर्व सिस्टम द्वारा निश्चित किया जाता है।

(५) ट्रेजरी सर्टिफिकेट :- ये लंदन मुद्रा-बाजार के ट्रेजरी बिल के ही ठीक समान हैं। इसके द्वारा सरकार अल्पकालीन कर्ज प्राप्त करती है। यहाँ के ट्रेजरी-बिल भी लंदन मुद्रा-बाजार के ट्रेजरी बिलों की ही तरह होते हैं। ये टेंडर मेथड द्वारा साप्ताहिक आधार पर तीन महीने की अवधि के लिए जारी किये जाते हैं। एक बार जारी करने के बाद ट्रेजरी बिलों में एक निश्चित समय तक सक्रिय बाजार रहता है।

इस प्रकार आजकल न्यूयार्क मुद्रा-बाजार का बहुत तेजी से विकास हो रहा है। इस बाजार में लेन-देन की मात्रा भी उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। यहाँ पर बैंक तथा अन्य संस्थाओं में न्यूयार्क के बैंकों से अतिरिक्त नकद-मुद्रा प्राप्त करने की होड़-सी लगी रहती है। किन्तु लंदन मुद्रा-बाजार में इस प्रकार की प्रवृत्ति का सर्वथा अभाव है।

Scanned with CamScanner